चल सप्तर्षि के पीछे!

लेखन: बर्नडीन कॉनली
चित्र: इवान ब्युकानैन
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जब सूरज उगे बटेर पहली चहके
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

राह तेरी जोहता वह बूढ़ा,
ले जाने आज़ादी की ओर।

गर सप्तर्षि का पीछा
तू करता चल।

परंपरागत लोकगीत - *फॉलो द ड्रिंकिंग गोर्ड* (सप्तर्षि तारामंडल) - पर आधारित यह कथा एक बालिका और उसके परिवार की उन चुनौतियों और अड़चनों का बयान करती है जिनका सामना उन्होंने सुदूर दक्षिण से अण्डरग्राउन्ड रेलरोड के सहारे गुलामी से बच निकलने के दौरान किया। गीत में शामिल प्राकृतिक संकेत चिन्हों को पहचानते और सप्तर्षि का पीछा करते-करते ग्यारह वर्षीय मेरी, उसका भाई और माँ इस जोखिम भरे सफ़र को तय करते हैं।
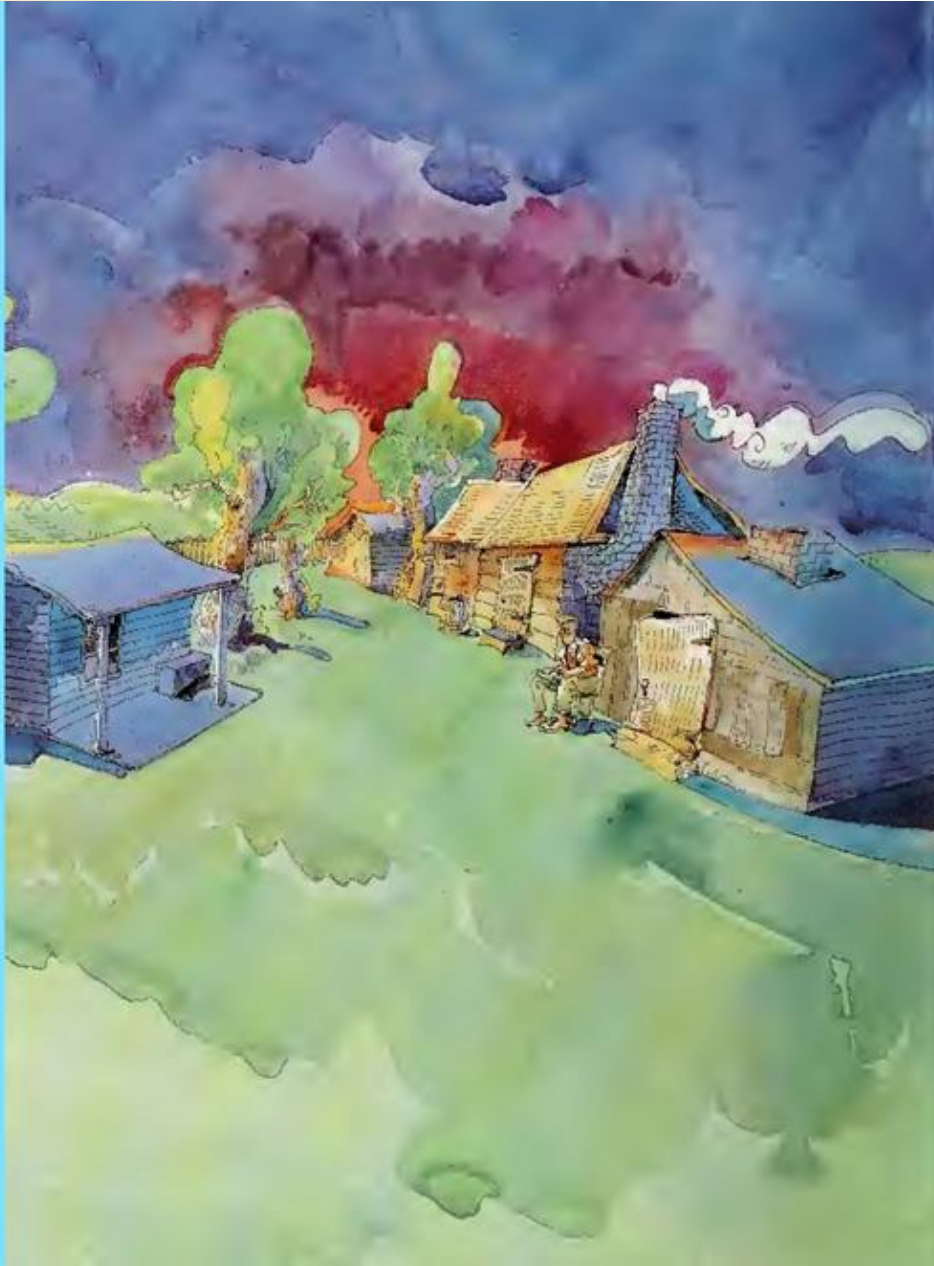
चल सप्तर्षि के पीछे!

लेखन: बर्नडीन कॉनली

चित्र: इवान ब्युकानैन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

झुटपुटा बस हुआ ही चाहता था। दिन भर में चुनी गई कपास का नाप-तोल हो चुका था। घिर आती रात में बेंत के पेड़ के परे बटेर का गीत सुनाई दे रहा था - बॉब बॉब-व्हिट, बॉब बॉब-व्हिट। कंठ से बरबस ही वह लोकगीत फूटने लगता है जिसमें सप्तर्षि का पीछा कर चलने की, काठ की टांग वाले पैग लैग जो की, आज़ादी हासिल करने उत्तर दिशा में भागने की बात पिरोई गई है। पर गीत को खुल कर गाने की कितनी भी इच्छा क्यों न हो, मुंह से एक लफ़्ज़ तक नहीं निकालते तुम। सिर्फ मन ही मन दोहराते हो। सप्तर्षि का पीछा करता चल। निकल भागने का वक्त आ चुका है।

मेरी प्रेन्टाइस महज ग्यारह बरस की थी जब उसकी माँ ने भागने का फ़ैसला किया। मेरी, उसकी माँ और भाई सैम्युअल गुलाम थे। वे मोबिल, अलाबामा के पास डार्बी कपास खेत में रहते थे। पहले बच्चों के पिता भी उनके साथ ही रहा करते थे। पर जब मेरी छह साल की हुई उसके पापा को बेच दिया गया। वे तीनों सप्ताह के छह दिन कपास चुनते थे। काम मुश्किल और थकाऊ था।

मेरी की एक ख़ासियत थी - उसमें कहानियाँ जमा करने का हुनर था। उसके कान इतने तेज़ थे कि हवा में तिरती धीमी-सी फुसफुसाहट तक पकड़ लेते थे।

एक रात खाना खाने के बाद मेरी गुपचुप घुड़साल की ओर बढ़ी। उसे शायद रात के कामों में हाथ बंटाना चाहिए था। पर उस रात उसका मन जिज्ञासा से भरा था। इसलिए क्योंकि उसने सुना था कि मालिक डार्बी कुछ गुलामों को नीलाम करने भेजने वाला था।

घुप्प अंधेरे में घुड़साल एक विशाल भूल-भुलैया सा लग रहा था। जब मेरी पहुँची वहाँ चुप्पी पसरी थी। पर दूर कोने में खड़े सइसों की घुस-पुस सुनाई देने में ज़्यादा वक्त न लगा।

"मैंने मास्टर डार्बी को कहते सुना कि पाँच गुलाम भेजे जाएंगे। यह भी कि वह प्रेन्टाइस छोकरा भी बेच दिया जाएगा।"

मेरी का चेहरा गर्म लोहे-सा तमतमा उठा, पर वह वहीं डटी रही। हो सकता है उसने गलत सुना हो। वह दौड़ कर उनसे पूछना चाहती थी, पर वे शायद उसे दुत्कार देते। आख़िर वह एक छोटी-सी लड़की ही तो थी। उनकी आवाजें धीमी होती गईं, और तब बिलकुल चुप हो गईं। बाहर कोई बाड़ के फाटक को धमाधम पीट रहा था। उन्होंने बातचीत बन्द क्यों कर दी? मेरी देखने बढ़ी कि इतना शोर कौन कर रहा है।

वह जंगली सा दिखने वाला शख़्स था, जो पूरे दम से हथौड़ा ठोक रहा था। पर खास काम कर रहा हो ऐसा लगा नहीं। मेरी कुछ दूर रुक उसे देखने लगी। शख़्स वह था जिसे लोग 'जर्नीमैन' (घुमक्कड़ मज़दूर) कहते थे। क्योंकि वह एक से दूसरी जगह सफ़र कर बढ़ईगिरी और लुहारी के छुटपुट काम करता था। उसके कपड़े मोटे-झोटे थे, सिर पर घुंघराले बालों का गुच्छा था और उसके दाहिने पैर की जगह काठ की टांग थी। मेरी के दिमाग में सैम्युअल की ख़बर कुलबुला रही थी। इसके बावजूद वह कुछ देर तक उस शख़्स को देखती रही। शोर को अनसुना कर वह शख़्स छोटा-सा गीत गाता रहा:

जब सूरज उगे और बटेर पहली चहके

सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

राह तेरी जोहता है वह बूढ़ा, ले जाने आज़ादी की ओर

ग़र सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

मेरी सइसों से और जानकारी लेने लौट ही रही थी कि उसे मिस्टर डार्बी आते दिखे। वह तेज़ी और चुपके से, वहाँ से खिसक ली। पर जाने से पहले उसने काठ की टांग वाले शख़्स की ओर पलट कर देखा। शायद देखने में ही कोई गलती रही हो, पर मेरी को लगा मानो उस शख़्स ने आँख मारी है।

मेरी अपने घर की ओर दौड़ी, उसके पैर धूल उड़ा रहे थे और दिमाग सैम्युअल की ख़बर से बोझिल था। उसे भान ही नहीं हुआ कि वह वही गीत गुनगुना रही है। वह गीत को बीसेक बार गा चुकी होगी कि फटाक! ममा ने अपनी हथेली से उसका मुँह बन्द कर दिया।

''मेरी प्रेन्टाइस, यह गीत कहाँ से सीखा ?''

ममा की आँखें उसे अपलक घूर रही थीं। उनमें जो लौ सुलग रही थी, मेरी ने पहले कभी देखी न थी।

''गीत ममा? वह तो उस काठ की टांग वाले जर्नीमैन को गाते सुना था। वही जो घुड़साल के पास काम कर रहा है। क्या पापा ने किसी घुमन्तू मज़दूर के बारे में कुछ बताया था? वह सचमें बड़ा ही अजीब-सा है। वह बस गीत की इसी कड़ी को दोहराए जा रहा था।''

उस रात ममा सैम्युअल और मेरी को बेंत के पेड़ के पास ले गई, जहाँ कोई उन्हें सुन नहीं सकता था। उसने दोनों को करीब खींचा और सप्तर्षि के गीत के बारे में बताया।
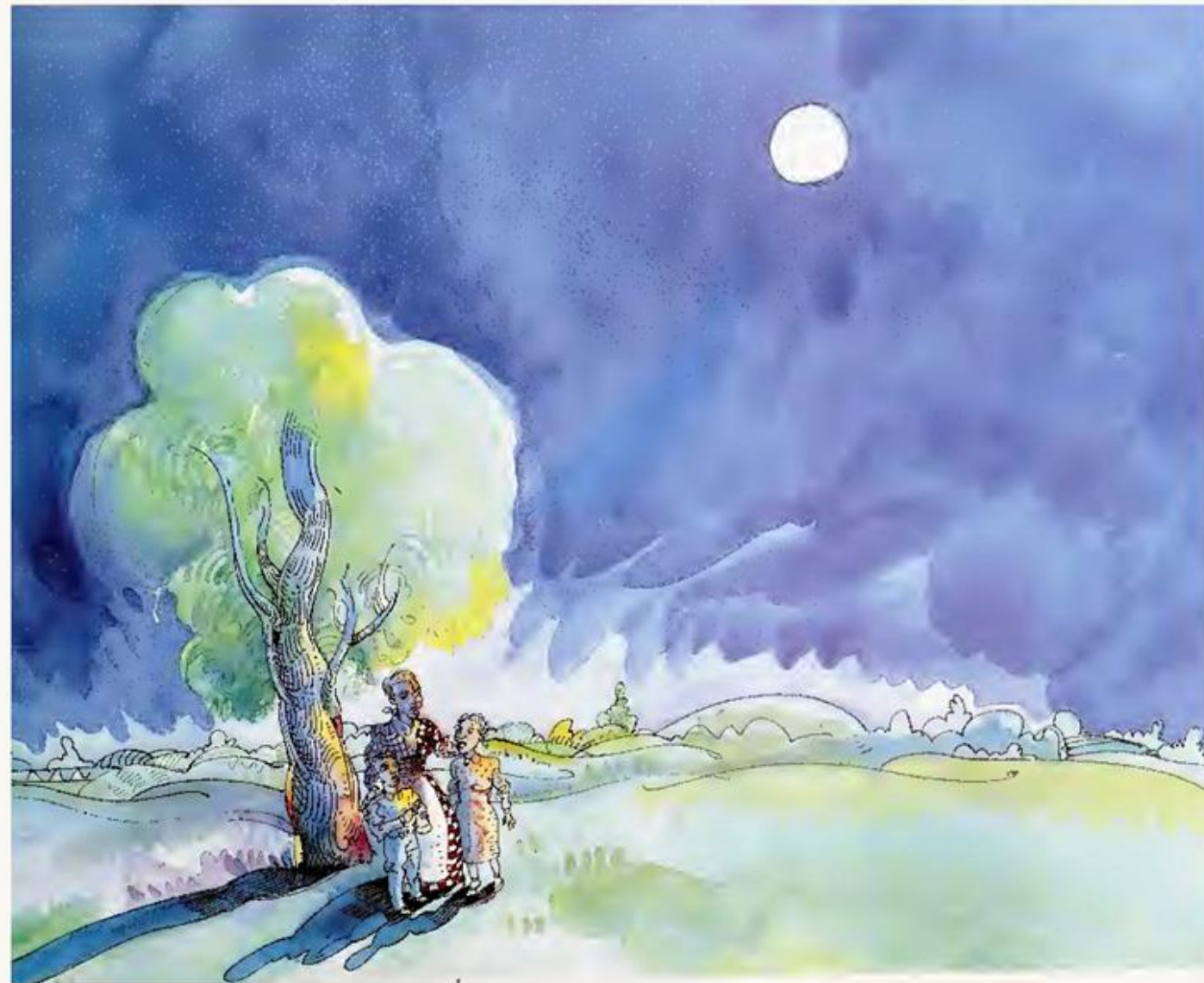
"वहाँ ऊपर आसमान में उस ओर देखो जहाँ बड़ा ड्रिंकिंग गोर्ड (सप्तर्षि तारामंडल) है।"

ममा ने सप्तर्षि तारामंडल की ओर इशारा किया जिसे वे कभी *बिग डिपर,* तो कभी *ड्रिंकिंग गोर्ड* कहते थे, क्योंकि वह दिखने में ठीक एक हत्थेदार तुम्बी की तरह लगता था जिससे वे खेतों में खटते समय पानी पिया करते थे।

"अब उसके कुछ ही ऊपर उस छोटे ड्रिंकिंग गोर्ड की ओर नज़र घुमाओ। जहाँ उसके हत्थे का सिरा है, वहाँ एक चमचमाता सितारा नज़र आ रहा है? वह ध्रुव तारा है।"

मेरी ध्रुव तारे को घूरने लगी मानो उसे याद में बसा लेना चाहती हो। माँ ने बताया कि काठ की टांग वाला शख़्स पैग लैग जो कहलाता है। वह पापा को जानता था क्योंकि वह अण्डरग्राउन्ड रेलरोड का एजेन्ट था। यानी मेरी ने जब उसे आँख मारते देखा तो यह महज उसकी ख़ामख़याली न थी। पर क्या इसका मतलब था कि ममा उत्तर दिशा में भागने की बात कह रही थी? सबके बच निकलने की बात?

ममा की आवाज़ धीमी और संजीदा थी।

“गीत में जिस राह जोहत बूढ़े की बात है वह खुद पैग लैग जो ही है। वह नदी पार करवा हमें उत्तर की ओर जाने में मदद करेगा। बटेर पहली चहके का मतलब है भागने के लिए बसन्त का समय सबसे अच्छा है। क्योंकि तब मौसम सही होता है और नदी में भराव रहता है। बायाँ पैर, काठ की टांग - यानी हम पैग लैग जो के दिखाए रास्ते पर चलेंगे। काठ की टांग की छाप दाहिनी ओर और पैर की छाप बाएं।”

कूल नदी का उम्दा पथ है
मृत पेड़ दिखाएं राह।
बायाँ पैर, काठ की टांग, बढ़ते जाएं आगे
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

नदी होती शेष पहाड़ों के बीच
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।
पार दूसरे नदी और है
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

नदी बड़ी मिले छोटी से
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।
ले जाए आज़ादी की ओर
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

मेरी वह सवाल पूछने को बेताब थी जो उसे खाए जा रहा था।
क्या इस सब का मतलब था कि वह पापा को देख सकेगी ?

The riverbank makes a very good road
the dead trees will show you the way
Left foot, Peg foot, traveling on
follow the Drinking Gourd
The river ends between 2 hills
follow the Drinking Gourd
There's another river on the other side
follow the Drinking Gourd
when the Great big river meets
the Little river
follow the Drinking Gourd
For The old Man is
waiting to carry you to freedom
follow the Drinking Gourd

अगली सुबह माँ ने उसे लाल कपड़े में लिपटी एक छोटी-सी चीज़ थमाई और कहा कि वह घुड़साल जाए और पैग-लैग जो को वह दे दे। मेरी को यह इल्म तो नहीं था कि चीज़ क्या है, पर वह समझ गई कि वे जाने को तैयार हैं। पैग लैग जो वहीं ठोका-पीटी करते मिला, जहाँ पहले था। उसने पहले तो मेरी पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। मेरी को भी पता नहीं था कि उस पर भरोसा किया जा सकता है या नहीं।

कूल नदी का उम्दा पथ है

मृत पेड़ दिखाएं राह।

बायाँ पैर, काठ की टांग, बढ़ते जाएं आगे

सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

पैग लैग जो फाटक पर हथौड़ा जमाता रहा। मेरी उसके बिलकुल पास चली आई।

हथौड़े की धमाधम हल्की हुई। मेरी ने पूछा, "हम नदी तक पहुँचेंगे कैसे ?"

"तुम्हारी ममा को मालूम है। "

"ममा को कुछ मालूम नहीं। वह कभी इस खेत के बाहर निकली ही नहीं है।"

"तुम्हारी माँ जो जानती है वह सब तुम्हें बताती थोड़ी है। उसके दिमाग में रास्ते का पूरा नक्शा है। बेशक उसे मदद की ज़रूरत पड़ेगी। तुम्हारे पापा ने तुम्हारे बारे में बताया था। कहा था कि तुम बहादुर हो। यह भी कि तुम्हारे ज़ेहन में इतनी कहानियाँ ठसी हैं कि किताबों का पूरा आला भी कम पड़े।"

उसके पापा! पैग लैग जो उनसे मिल चुका है? मेरी सवाल दागने को आतुर थी। पर पैग लैग जो की भौंहें तन गईं, वह ज़ोर से हथौड़ा चलाने लगा। मेरी ने कनखियों से ताका। मास्टर डार्बी घुड़साल की ओर आ रहे थे। वह पलटी और भागी कि उसके हाथ से कपड़े में लिपटी चीज़ छूट गई। अंगूठे बराबर आकार की एक चीज़ धरती पर थी।

यह तो एक छोटा-सा ड्रिंकिंग गोर्ड था। ज़रूर पापा ने खुद इसे तराशा होगा। वापस लौटने का वक्त नहीं था, सो मेरी ने उसे उछाला और पैग लैग जो को उसे लपकते देखा। कुछ ही देर में वह घर की राह पर थी। पर उसे पक्का भरोसा था कि उसने पैग लैग जो को कहते सुना था - "नदी के पास मिलूंगा।"

उस रात ममा मेरी और सैम्युअल को फिर से बेंत के पेड़ के पास ले गईं। उन्हें कपड़ों के ऊपर कई कपड़े पहनाए। ममा के होंठों से एक भी लफ्ज़ न निकला, पर मेरी समझ चुकी थी कि निकल भागने का समय हो चुका है। मेरी ने ध्रुव तारे को नज़र गाड़ कर देखा, यह जानने कि वह उनकी निगहबानी कर तो रहा है। तब वह चल पड़ी सैम्युअल से एक कदम पीछे और ममा से दो कदम। ममा के हाथ में खाने के सामान से भरा एक झोला, और एक बेंत भर थी, जिसे पापा ने उसके लिए तराशी थी।

पौ फटने से पहले उन्हें टॉमबिगबी नदी के पास पहुँच जाना था ताकि उनका सुराग किसी को न मिले। जब मास्टर डार्बी को पता चलेगा वे शिकारी कुत्तों के साथ उन्हें खोजने निकलेंगे। मेरी के पैर थक चले थे। उसे लगने लगा कि ममा और सैम्युअल दौड़े जा रहे हैं। वह सुस्ताने को एक पत्थर पर टिकी। पर ममा ने उसे झकझोरा। झोले से एक बिस्कुट निकाल खाने को दिया, उसके पैर मले। उन पर फफोले पड़ चुके थे।

जब वे नदी तक पहुँचे, सूरज उगने को था। मेरी को पास के खेतों से मुर्गों की बाँग सुनाई दी। मिस्टर डार्बी को जल्द ही पता चल जाने वाला था कि वे गायब हैं। नदी के तट पर ममा ने अपनी छड़ी से इशारा किया। बाँएं पैर की छाप और काठ की टांग की छाप - पैग लैग जो संकेत छोड़ गया था।

उस दिन और अगले कई दिन वे हर रात नदी के किनारे-किनारे बढ़ते और दिन में दलदल या कछार में छिप जाते। वे पैग लैग जो के कदमों के पीछे चलते रहे। तब एक मोड़ पर अचानक निशान ग़ायब हो गए। पर राह दिखाने वाला सप्तर्षि अब भी था। हर दिन के साथ वे और थके, और भूखे हो चले थे। खाना लगभग खत्म होने को था, सो वे कम-कम खा रहे थे। उन्होंने तय किया कि मेरी और सैम्युअल एक खेत के पास छुपेंगे, ताकि खाने का जुगाड़ हो सके।

"अगर हम उस जगह हैं, जहाँ मैं सोचती हूँ हम हैं, तो तुम्हें खलिहान के पास ही गुलामों का बासा मिलेगा। जब अंधेरा घना हो जाए तो बटेर की आवाज़ निकालना, धीमी पर सही। उसके बाद अगर बासे की चौखाने वाली खिड़की में लालटेन जल उठे तो समझ लेना कि कोई मदद करेगा," ममा ने समझाया।

मेरी और सैम्युअल ने रात होने का इन्तज़ार किया। वे खलिहान के पास छिपे और बटेर की तरह गाने की कोशिश की - बॉब बॉब-व्हिट, बॉब बॉब-व्हिट! पर कोई लालटेन न जली। वे रुके रहे। जब घुप्प अंधेरा हो गया, इतना कि वे एक-दूसरे तक को न देख सकें, तब उन्होंने किसीको एक छोटी-सी लालटेन जलाते देखा। वे खलिहान से सटे खड़े रहे। कुछ देर बाद किसीने उन्हें एक भारी बोरा थमाया। मेरी ने एक बूढ़ा चेहरा और उम्र से दोहरा झुका शरीर देखा।

"उन्होंने तुम लोगों को देख लिया है मेरी और सैम्युअल," बुज़ुर्गवार ने फुसफुसा कर कहा।

"आप हमारे नाम कैसे जानते हैं ?" मेरी ने जानना चाहा।

"पूरे कस्बे में इश्तहार लगे हैं। तुम्हारा मालिक नदी के इस छोर से उस छोर तक खतरे की घंटी घनघना चुका है।"

"अगर हम नदी के किनारे नहीं चल सकते तो हम आगे कैसे बढ़ेंगे?" सॅम्युअल ने पूछा।

"बोरे में काली मिर्च है। अगर कुत्ते पास आ जाएं तो उसे बुरकना, वे पीछा नहीं कर पाएंगे। इस इलाके को पार करने के बाद बस कुछ ही दिन नदी किनारे चलना है। टैनेसी नदी के पास पहुँचने पर अच्छे लोग मिलेंगे। वे क्वेकर हैं। उन्हें पता है कि तुम लोग आ रहे हो। उन्होंने तुम्हारे पापा की भी मदद की थी।"

"पर उन्हें कैसे पता चलेगा?" मेरी जवाब का इन्तज़ार करती रही। पर बूढ़ा जा चुका था।
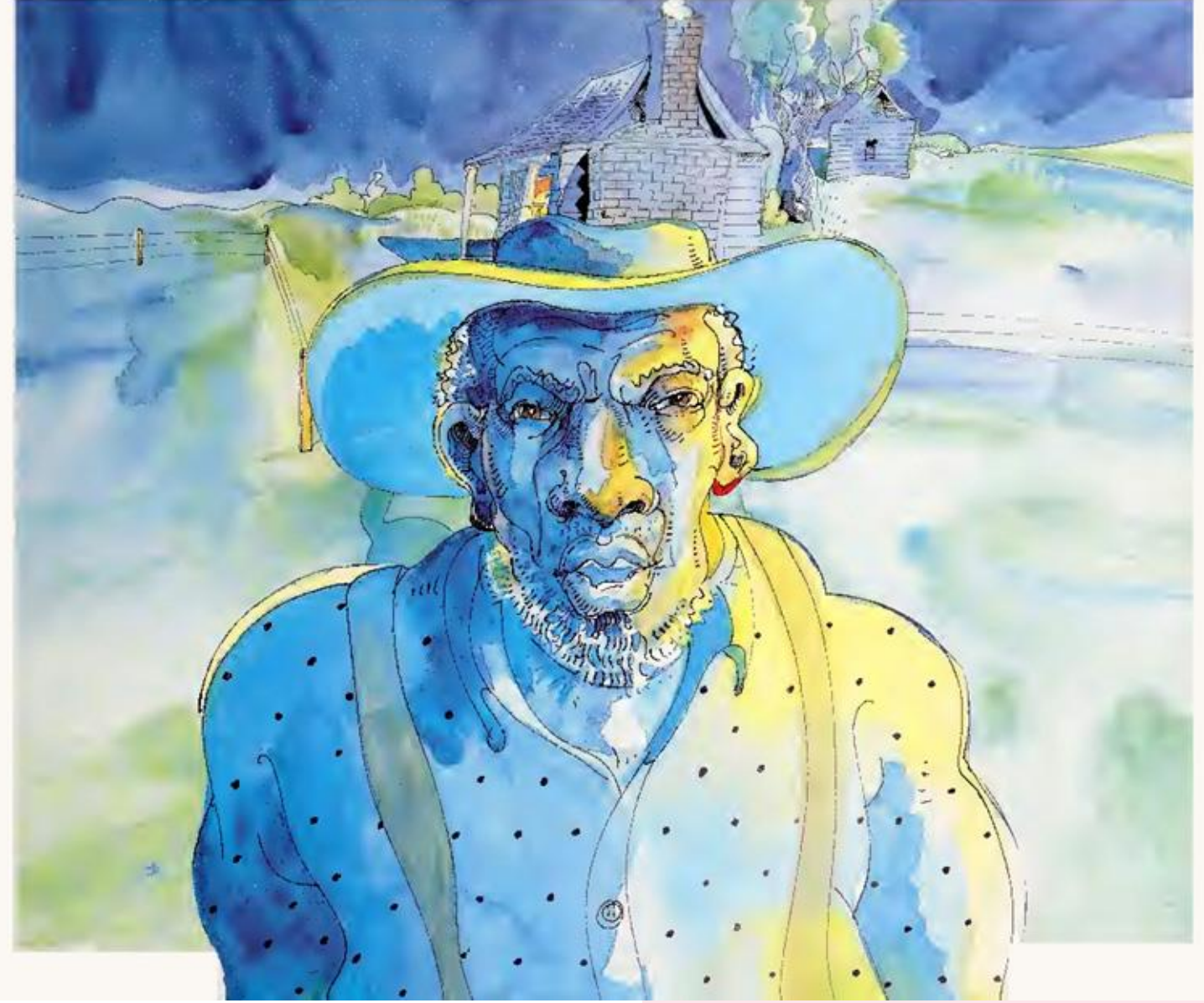
मेरी, सैम्युअल और ममा अब जंगल में घुसे। नदी तट महफ़ूज़ नहीं था। वे धीमे-धीमे बढ़ रहे थे, झूलती लताओं और झाड़-झंखाड़ से जूझते। यह ख़याल कि कोई ईनाम के खातिर उन्हें तलाश रहा है परेशानी बढ़ा रहा था। वे अपने पीछे काली मिर्च का चूरा बुरकते जा रहे थे। मेरी को दलदल नापसन्द था पर फिलहाल उसे लग रहा था कि काश वह नदी के पास होती।

मेरी ने ही सबसे पहले कुत्तों को सुना। ममा ने कहा “ध्यान न दो, बढ़ते रहो। हो सकता है वे खरगोशों का शिकार कर रह हों।” पर भौंकने की आवाज़ पास आती गई, कुछ करना ज़रूरी था। ममा ने बचा-खुचा चूरा बिखेरा और सैंकड़ों झूलती लताओं के झुरमुट के बीच दोनों को खींच लिया। जगह तंग थी, बस इतनी कि तीनों किसी तरह समा सकें। वे सटे-सटाए ऐसे बैठे थे कि उनकी दिल की धड़कनों में फ़र्क करना मुश्किल था।

कुत्ते पास आते जा रहे थे। भौंकना ज़ोर पकड़ रहा था, मनो वे जानते हों कि तीनों कहाँ हैं। जल्द ही घोड़ों की टापें और कुत्तों को उकसाती इन्सानी आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं।

मेरी इन्तज़ार करती रही, यह सोच कि अब तो वे गिरफ्त में आ ही चुके हैं। उसे विश्वास ही नहीं हुआ जब कुत्तों ने भौंकना बन्द कर दिया और किंकियाने लगे। काली मिर्च ने असर दिखा दिया था। ममा के चेहरे पर तनाव की जगह एक मुस्कान ने ले ली।

चन्द रोज़ बाद मेरी, सैम्युअल और ममा जंगल के मैदानी हिस्से में आ पहुँचे। उसके पार छोटा-सा कस्बा था। वे वहाँ घुस नहीं सकते थे। उनका हुलिया बताने वाले इश्तहार वहाँ भी चस्पां होंगे। पर टैनेसी नदी तो कस्बे के पार थी।

उस रात तीनों ने बिल्लियों की तरह दबे पाँव मैदानी हिस्से को पार किया। मेरी ने किसीके कदमों की आहट सुनी। तीनों कब्रगाह की ओर भागे और बड़े यादगारी पतथर के पीछे जा छिपे। पर आहट करीब आती गई।

''क्या तुम एस्थर प्रेन्टाइस नहीं हो?''

ममा कुछ न बोली। पर मेरी ने उसे हौले से सिर उठाते देखा। यह शख़्स तो क्वेकर था। उसकी दाढ़ी करीने से कटी थी। उसने बताया कि गुलामों को धर-पकड़ने वाले दोनों नदियों के किनारे उन्हें तलाश रहे हैं। पर अगर वे लोग घाट पर लगी उसकी नाव तक पहुँच जाएं तो वह उन्हें सीधे टैनेसी नदी तक पहुँचा सकता है। दोनों बच्चों ने ममा के पीछे-पीछे, सांसे थाम, छिपते-छिपाते कस्बे के मकानों को जस-तस पार किया।
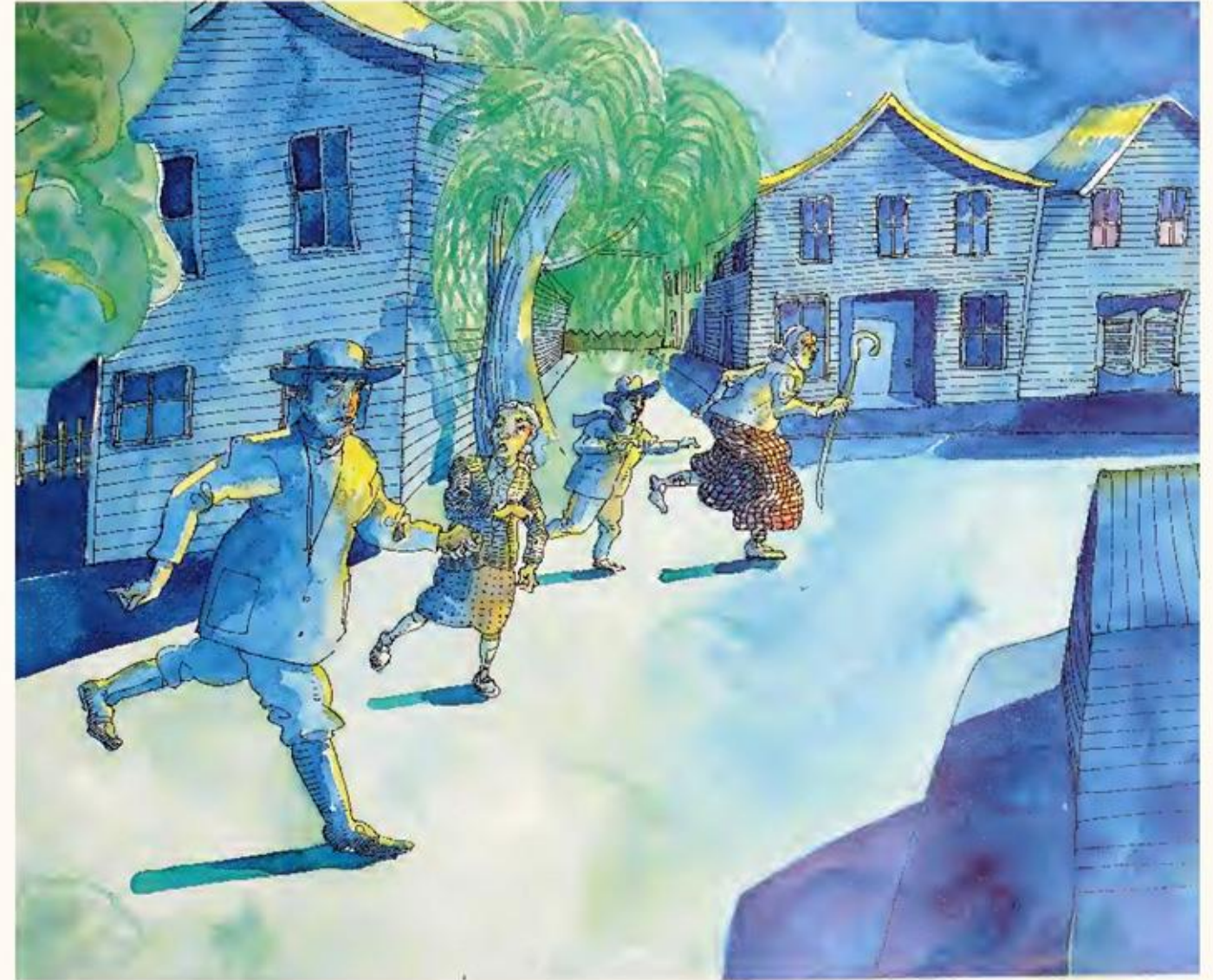
नाव पर पहुँच मेरी की आँखें अचरज से फट गईं। नाव के तलहट में एक तहख़ाना था। मेरी, ममा और सैम्युअल उसमें उतरे। मेरी ने क्वेकर, उसकी पत्नी और बेटे को ख़ुफिया दरवाज़े पर आटे और माल से भरे बोरे धरते सुना।

अगली सुबह मेरी और उसका परिवार दिन-दहाड़े टैनेसी आ पहुँचा था। उन्हें तलाशने वालों को उनकी भनक तक नहीं पड़ी थी।

क्वेकर ने आगाह किया कि अगले पड़ाव, ओहायो नदी तक कई ख़तरे हैं। यह भी कि पैग लैग जो उनको ख़तरों से बचा नहीं सकता। क्योंकि जैसा गीत से साफ है टैनेसी दो पहाड़ों के बीच खत्म होती है और ओहायो नदी उन पहाड़ों के उस पार है।

पैग लैग जो का सुराग मिलने में उन्हें पूरे दो दिन लगे। मेरी को ही उसके पैरों के निशान दिखे - बाँए पैर की छाप और काठ की टांग का निशान। वे उस तंग रास्ते पर दौड़े जिसके छोर पर दो पहाड़ों के बीच संकरी खाड़ी थी। वहाँ और निशान थे, पर पैग लैग जो का अता-पता न था।

मेरी का दिल बैठ गया और आँखें डबडबा आईं। पर वह तब अचरज से भर गई जब पेड़ों के पीछे से पापा निकले। पापा! मेरी को लगा यह सपना है। पर पापा ने उसका हाथ थामा और हथेली पर वह नन्हा हत्थे वाला प्याला धर दिया। पापा थके नज़र आ रहे थे, पर उन्होंने तीनों को खींच कर सीने से लगा लिया। लगा वे उन्हें यों ही सटाए रहेंगे। पापा ने बताया कि वे रास्ते भर ममा ओर उसके दो बहादुर बच्चों के किस्से सुनते आए हैं। उन्हें इससे इतनी ताकत मिली कि वे बिना रुके दौड़ते चले आए। कहने को बहुत था पर अभी तो ओहायो नदी भी पार करनी थी। रात ढ़लने पर पापा हाथ पकड़ उन्हें पैग लैग जो के पास ले गए। खाड़ी में बंधी नाव तक पहुँचने पर उन्होंने पैग लैग जो को इन्तज़ार करते पाया।

चाँद बादलों की आड़ में छिप गया ताकि वे नदी पार कर सकें। मेंढ़क मानो उनकी ख़ैरख़्वाही मनाने टर्राने लगे। पैग लैग जो चुपचाप नाव खेता गया जब तक वह नदी के दूसरे छोर न जा टिकी। उनका सफ़र अब भी बाकी था, वे पूरी तरह महफ़ूज़ न थे। पर अब वे सब साथ-साथ थे, आज़ादी की ओर बढ़ रहे थे। मेरी अपनी कल्पना में ख़ुद को अपने बच निकलने की कहानी कहते सुन रही थी।

कूल नदी का उम्दा पथ है
मृत पेड़ दिखाएं राह।
बायाँ पैर, काठ की टांग, बढ़ते जाएं आगे
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

नदी होती शेष पहाड़ों के बीच
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।
पार दूसरे नदी और है
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

नदी बड़ी मिले छोटी से
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।
ले जाए आज़ादी की ओर
सप्तर्षि का पीछा तू करता चल।

अंत